द्वितीय–अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावनाः–

मानव को सतत् प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। अनुसंधान की योजना में संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण शोध के उद्देश्य की प्राप्ति अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, साहित्य पुनरावलोकन एवं कठिन परिश्रम का कार्य है, प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम हैं क्षेत्रीय अध्यायों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है जिसमें किसी कार्य की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती।

2.2 संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्वः–

वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधार्थी उचित दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में

कितना कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं? तब तक न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूप रेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करने हेतु निम्न परिभाषा दी है–

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आवश्यकता खोजों से परिभाषित होता है उसी प्रकार शिक्षा में जिज्ञासु छात्र/छात्राएँ अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधान के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

—"गुड बार एवं स्केट्स"—

2.3 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

Pandey (2007) Studied whether teachers have the relationship with awareness of and adherence to values inherent in Fundamental Duties.

The sample comprised of 900 teachers of both sexes (450 male & 450 female) Teaching in Govt. aided and recognized, primary and secondary schools located in urban and rural, areas of Varansi and tribal, areas of Sonebhadra district Following tools were used.

(1) Fundamental Duties awareness. Questionnaires for teachers. (FDAQT) constructed by the investigator.

(2) Value Inherent in Fundamental, Duties questionnaire for Teachers (VFDQT) prepared by Pandey.

The Following findings were observed

There exists significant positive relationship between awareness of and adherence to value inherent in the Fundamental Duties among primary male teachers. Contrary to this for environmental and low abiding Values, no such significant relationship was observed. For female primary school, teachers it was observed that adherence to values inherent in the Fundamental. Duties strengthens with increase in awareness of Fundamental Duties.

For male primary teachers, adherence to patriotic, Social, cultural, spiritual, Knowledge and excellence value increases upto awareness of Fundamental Duties.

For Female primary teachers, adherence to patriotic, cultural, environmental, and law abiding value strengthens with increase in awareness of Fundamental Duties.

There is no significant difference between competent incompetent, male teachers on aesthetic, social and humanistic value.

But in comparison to incompetent female teachers the competent female teachers were found to have higher mean scores on knowledge, creative by and humanistic and religions.

In case of economic and political Value, incompetent teachers had scored, significantly higher mean value than competent Teachers.